आचार्य शामकुण्ड

जीवन-परिचय : आचार्य शामकुण्ड अपने समय के बड़े विद्वान थे। उनका समय सम्भवत: सातवीं शताब्दी है। इस विषय में निश्चयत: या प्रामाणिक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

रचना-परिचय : इन्होंने पद्धति रूप टीका का निर्माण किया था—

1. पद्धतिरूप टीका : पद्धति अर्थात् वृत्ति सूत्र के विषम पदों के भंजन को या विश्लेषणात्मक विवरण को पद्धति कहते हैं। यह टीका षट्खंडागम के छठवें खण्ड को छोड़कर आदि के पाँच खण्डों पर तथा दूसरे सिद्धान्त ग्रन्थ कषाय-प्राभृत पर लिखी थी।

शामकुण्डाचार्य के समक्ष यतिवृषभाचार्य कृत वृत्तिसूत्र रहे थे, जिन पर इन्होंने बारह हजार श्लोक प्रमाण पद्धति टीका की रचना की थी।